22-3-2020HB-Rav-1 final_Layout 1 20-Mar-20 6:40 PM Page 1

haribhoomi.com

छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

हरिभूमि रविवार भारती

रविवार 22 मार्च 2020

कहानी
मीठे पानी का कुंआ
P- 2



P- 3
कब समझेंगे हम
पानी की कीमत





मैंने अब तक वही काम किया है जिसमें कुछ अलग करने को था : राजीव खंडेलवाल P- 4

चैत्र नवरात्र विशेष

चैत्र नवरात्र के साथ ही विक्रम संवत 2077 के आगमन का शंखनाद हो रहा है। भारतीय पर्व-परंपरा और संस्कृति में इनका शुभारंभ अत्यंत पुण्यकारी माना गया है। इस दौरान हमें नवचेतना से भरकर नवारंभ के लिए संकल्पित होने के साथ ही मां शक्तिस्वरूपा की आराधना के मर्म को भी आत्मसात करना चाहिए। इससे हमारा ही नहीं सभी का कल्याण होगा।

नव संवत्सर-नवरात्र महोत्सव

भारतीय तेजस्विता का पर्व



आवरण कथा
प्रो. बल्देव भाई शर्मा



विक्रम संवत यानी नवसंवत्सर और इसी दिन चैत्र मास शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को प्रारंभ होने वाला नवरात्र महोत्सव, भारतीय समाज-जीवन की तेजस्विता के प्रतीक पर्व हैं। अत्यंत न्यायप्रिय और पराक्रमी सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य, उज्जयिनी जिनकी राजधानी थी, ने बर्बर आक्रमणकारी शकों और हूणों को खदेड़कर भारत भूमि को भयमुक्त किया। उन्हें इस गौरव के लिए 'शकारि' उपाधि से महिमामंडित किया गया और उन्हें 'शकारि विक्रमादित्य' कहा जाने लगा। उल्लेख है कि उनकी इन्हीं गौरवशाली स्मृतियों को अक्षुण्ण रखने के लिए 2076 साल पहले विक्रम संवत का शुभारंभ हुआ। इस साल यानी 2020 ईस्वी सन में विक्रम संवत 2077, बुधवार 25 मार्च से शुरू हो रहा है। इस साल का अधिपति बुध होने से पूरे वर्ष धर्म और अध्यात्म की प्रधानता रहेगी। नवसंवत्सर भारतीयता की गौरवशाली पहचान है।

इसी दिन हुआ सृष्टि आरंभ

ब्रह्मपुराण में उल्लेख है कि इसी दिन सृष्टि का शुभारंभ ब्रह्मा जी ने किया था। चारों ओर पुष्पों व नवपल्लवों से सुशोभित प्रकृति जब खिलखिलाकर नाचती है, धरा पर उल्लास हिलोरें मारता है, सूर्य का तेज धीरे-धीरे बढ़ता हुआ शीत और निशा को कम करने लगता है, ऐसे ऊर्जा से भरपूर दिन को ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना के लिए चुना-

चैत्रमासे जगत संसर्ग प्रथमेऽहनि
शुक्लपक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदय सति।

इसी दिन धरा पर सृष्टि का प्रथम सूर्योदय हुआ और उल्लेख है कि एक अरब 97 करोड़ 29 लाख 49 हजार 21 वर्ष पूर्व प्रथम मानव का प्रादुर्भाव हुआ। भारत में प्रथमतः मानवीय चेतना का जन्म और विकास संपूर्ण चराचर जगत और विश्व कल्याण के महान उद्देश्य के लिए हुआ, न कि पाश्चात्य जीवन दृष्टि 'ईट ड्रिंक एंड बी मैरी यानी खाओ, पीयो और मौज करो' जैसी निजी अवधारणा के लिए। अपने महाकाव्य 'कामायनी' में जयशंकर प्रदास ने प्रथम मानव मनु के लिए सृष्टि रचना का उद्देश्य व्याख्यायित करते हुए लोक कल्याणकारी भाव व्यक्त किया है-औरों को हंसते देखो मनु

हंसो और सुख पाओ
अपने सुख को विस्तृत कर लो
जग को सुखी बनाओ।

लोकहित की भावना सर्वोपरि

भारतीय नववर्ष का संदेश है मनुष्यता का अर्थ खोजना, व्यक्ति के भावबोध से ऊपर उठकर मानवीय चेतना से जुड़ना और शांति, सौहार्द के भाव के साथ लोकहित के लिए जीवन जीने का संकल्प लेना। यह सोच 'नए साल' के उस आधी रात के जश्न के मौज-मजे से बिल्कुल अलग है, जब जश्न के नशे में डूबी भीड़ के प्रति उपद्रवी आशंकाओं से घिरी पुलिस चारों ओर चौकन्नी होकर तैनात रहती है। इससे स्पस्ट है कि सृष्टि रचना के साथ जिस भारतीय संस्कृति का जन्म हुआ, उसके केंद्र में मानवता का पोषण और लोककल्याण ही है। संत तुलसीदास ने इसी भाव को 'रामचरितमानस' में व्यक्त करते हुए लिखा है-जड़, चेतन, जल, जीव, नभ/सकल राममय जान।' यानी सृष्टि के हर अंश में एक ही परमतत्व समाया है, वही प्राणिमात्र को परस्पर जोड़े रखता है बिना किसी स्वार्थ-भेद के। इसको और स्पष्ट करते हुए ईशावास्योपनिषद में उल्लेख है-

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यांजगत/तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम। यानी ईश्वर जगत के कण-कण में है, सब उसी का अंश हैं। इसलिए दूसरों के हिस्से का छोड़कर जीवन का उपभोग करो। यह भारत में सृष्टि रचना का महान उद्देश्य है, जिसमें उत्पीड़न, शोषण या अनाचार का कोई स्थान नहीं है। पूरे विश्व को भारतीय संस्कृति की यह अनुपम देन है। यही भारत का मानव धर्म है, जिसे स्वामी विवेकानंद ने अपने शिकागो संबोधन में गर्वांवित होकर व्यक्त किया था। यह धर्म और संस्कृति ही भारत की आत्मा और पहचान है, जिसे आधुनिकता के नाम पर और यूरोपीय चकाचौंध के पीछे भागते हुए हम भूल रहे हैं। यह सृष्टि संवत हमें उस तेजस्विता का स्मरण दिलाता है, जो हमारे ऋषियों ने अपने जीवन की साधना से अपनी संतति यानी हम सब भारतीयों के लिए प्रकट की। ऋग्वेद में यही संदेश 'मनुर्भवः' यानी मनुष्य बनो के मंत्र के रूप में गूंजता है।

मानवीयता को जगाने का अवसर

भारत ऋषि संस्कृति का देश है, जिसने विश्व में लोक चेतना को परिपुष्ट किया। इसी लोकचेतना में से आद्याशक्ति देवी दुर्गा का प्रादुर्भाव हुआ, जो मानवीयता और लोकहित के संरक्षण के लिए आसुरी वृत्तियों का संहार करती है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से शुरू होने वाला नौ दिन का नवरात्र महोत्सव व्यक्ति के मन और जीवन में दैवीय तत्व के समावेश और राक्षसी मनोवृत्ति के समापन का संदेश देता है। यह पर्व मानव जीवन की तेजस्विता को जगाने वाला है। व्रत, उपवास, अर्चन-पूजन, जागरण आदि तो एक प्रक्रिया भर हैं, लेकिन अंतःकरण में दैवीय भाव जगाने और उसका निरंतर आचरण करने के संकल्प की बजाय इस कर्मकांड में ही खो जाना और इसे महज मौज-मस्ती का पर्याय बना देना, पर्व की सार्थकता को न समझना है।

समझें पर्व की सार्थकता

हालांकि हम सब इन पर्वों को मनाते तो हैं लेकिन इनके निहितार्थ को आत्मसात नहीं कर पाए। अन्यथा साल में दो-दो बार यानी चैत्र में बासंतिक नवरात्र और आश्विन मास में शारदीय नवरात्र के दौरान कन्या पूजन और कंजक में ढूंढ़-ढूंढ़कर बेटियों को भोजन कराने और उनके पैर पूजन के बावजूद लड़कियां और महिलाएं इतनी असुरक्षित और अपमानित होकर जीने को मजबूर न होतीं। यह कैसी देवी पूजा है, जो व्यक्ति को स्त्रियों की सुरक्षा और सम्मान करना नहीं सिखा पाती? आज भी आए दिन निर्भया कांड जैसी बर्बरता यह सवाल बार-बार खड़ा करती है। काश, एक बार भी देवी पूजा के दौरान हम यह सोच पाएं और यह सवाल मन को झकझोर सके।

समझें शक्ति-पूजन का मर्म

स्वामी विवेकानंद दक्षिणेश्वर की मां काली के परमभक्त रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। पिता की मृत्यु के बाद नरेंद्र नाथ दत्त (विवेकानंद) का घर-परिवार भीषण आर्थिक संकट में पड़ गया। नरेंद्र ने गुरु को कहा कि वे माता से उनके परिवार के लिए सुख-समृद्धि मांगें। माता तो परमहंस की बात टाल नहीं सकतीं, पर गुरुदेव ने कहा कि तुम स्वयं जाकर मां से कहो। नरेंद्र मंदिर में जाकर मां से प्रार्थना करते हैं लेकिन घर-परिवार के लिए नहीं जगत के कल्याण के लिए 'ज्ञान-वैराग्य-भक्ति' मांगते हैं और गुरु के चरणों में गिरकर कहते हैं, 'मां से मैं अपने लिए यह तुच्छ चीज नहीं मांग सकता, मां तो सबका भरण-पोषण करती हैं, मेरे घर-परिवार का भी करेंगी।' वही स्वामी विवेकानंद 27 अक्टूबर 1885 की संध्या आरती के बाद दक्षिणेश्वर में मां काली के चरणों में बैठकर आह्वान करते हैं-

हे मां! चमत्कार अपार जगत रचना संसार
शोभार आगार विश्व संसार
शोमे वसुंधरा धन-धान्यमय
होय पूर्ण तोमार भंडार।

जीवन की यह व्यापक दृष्टि पाना ही देवी की आराधना का मर्म है।

यही है पर्व का संदेश

इसी बासंतिक नवरात्र के आखिरी दिन यानी नवमी को भगवान श्रीराम का जन्मोत्सव मनाया जाता है। राम, मानव जीवन का आदर्श हैं। वाल्मीकि ने रामायण में श्रीराम को 'रामो विग्रहवरन धर्मः' कहा है यानी राम धर्म का साक्षात रूप हैं, जिन्होंने संतों और धर्म की रक्षा के लिए राज्य सिंहासन त्याग दिया और 14 वर्षों तक सपत्नीक वन-वन घूमकर राक्षसों का संहार किया। भील-निषाद-वानर आदि वंचितों को सम्मानपूर्वक अपने साथ जोड़ा। इन्हीं श्रीराम ने लंका विजय के बाद स्वर्णमयी लंका का मोह छोड़कर अपनी मातृभूमि अयोध्या लौटना, उसकी सेवा करना श्रेष्ठ समझा और कहा-जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। यानी, मां और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ हैं। यही राम तत्व हमारे जीवन में, मन में, आचरण में समाहित हो और हम सही अर्थों में मनुष्य बनकर जीना सीखें, नवरात्र पर्व का यही संदेश है। सुखद भविष्य और बहुत कुछ पाने की लालसा में जब हम मानवीय गुणों की अनदेखी करते चले जाते हैं तो उस बेतहाशा दौड़ में हम जिस मुहाने पर जा खड़े होते हैं, वहां तनाव, क्लेश, अलगाव ही हाथ लगता है और बहुत कुछ हासिल करके भी हम अकेले खड़े दिखते हैं। ये पर्व हमें सद्गुण-सदाचार से युक्त आनंदपूर्ण जीवन-जीने की कला सिखाते हैं। राम का जीवन भी यही प्रेरणा जगाता है। रावण के साथ युद्ध में राम के इन्हीं गुणों से अभिभूत होकर देवी आशीर्वाद देती हैं-

होगी जय, होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन!! *

(लेखक कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलपति हैं)

तब बरसेगी मां की कृपा

दुर्गा सप्तशती में वर्णित है कि महिषासुर के वध के बाद देवताओं ने माता देवी दुर्गा की स्तुति करते हुए कहा-

तस्य वित्तर्धिं विभवैर्धनदारादि संपदां/वृद्धयेऽस्मत् प्रसन्ना त्वं भवेधा सर्वदांबिके। अर्थात आंबिके आप भक्तों को धन, समृद्धि, वैभव दें और सदा हम पर प्रसन्न रहें। नवरात्र शक्ति की आराधना का पर्व है। दुर्गा ने शुंभ-निशुंभ, मधु-कैटभ व महिषासुर आदि न जाने कितने दुष्ट राक्षसों का वध किया, धर्म-न्याय व सत्य की स्थापना के लिए ताकि सज्जन शक्ति का उदय हो और वह निर्भय होकर रह सकें। माता व्यक्ति के क्लेश, दुख-दैन्यव, भय का नाश करती हैं। क्या हम इसके लिए सुपात्र हैं कि देवी की कृपा हमें मिले? इस पात्रता के लक्षण हैं-सदाचार, धैर्य, धर्मनिष्ठ भाव, निस्वार्थता, सेवा-परायणता, प्रेम और मानवीय संवेदना। हमारे जीवन में यदि इन दैवीय तत्वों का वास नहीं हो रहा तो देवी पूजा व्यर्थ है। केवल धूप-आरती करने या घंटा-घड़ियाल बजाने, शोर-शराबे के साथ फिल्मी गानों की तर्ज पर जागरण करने से माता शायद ही प्रसन्न हों। माता को प्रसन्न करने के लिए सद्गुण-सदाचार से युक्त जीवन, सज्जनता-साधुता और परोपकार का भाव जरूरी है। *

वास्तु नियमानुसार करें

मां भगवती की पूजा





विधि-विधान
अनीता जैन, वास्तुविद

नवरात्र के पावन नौ दिनों में जगत-जननी मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा बड़े ही श्रद्धा और भक्ति भाव से की जाती है। हर जगह भक्ति के माहौल से वातावरण सतरंगी और ऊर्जावान हो उठता है। देवी मां संपूर्ण जगत को शक्ति, स्फूर्ति और विनम्रता प्रदान करती हैं, सभी को अपना ममतामयी आशीर्वाद देती हैं। तो फिर देवी मां की पूजा के इन बेहद खास नौ दिनों में यदि श्रद्धा भक्ति के साथ-साथ कुछ वास्तु नियमों को ध्यान में रखकर मां की उपासना की जाए तो इससे पूजा में ध्यान भी लगता है और पूजा के फल में अतिशय वृद्धि होती है।

नवरात्र में मां शक्तिस्वरूपा की पूजा करने से उनकी कृपा प्राप्त होती है। ऐसे में अगर आप वास्तु नियमों का भी ध्यान रखें तो आपके लिए और भी कल्याणकारी होगा।

चुनें सही दिशा

वास्तु विज्ञान के अनुसार मानसिक स्पष्टता और प्रज्ञा का दिशा क्षेत्र ईशान कोण यानी उत्तर-पूर्व दिशा को पूजा-पाठ के लिए श्रेष्ठ माना गया है। यहां पूजा करने से शुभ फलों में वृद्धि होती है और आपको हमेशा ईश्वर का मार्गदर्शन मिलता रहता है। ध्यान रहे कि पूजन कक्ष साफ-सुथरा हो, उसकी दीवारें हल्के पीले, गुलाबी, हरे या बैंगनी जैसे आध्यात्मिक रंग की हों तो अच्छा है, क्योंकि ये रंग आध्यात्मिक ऊर्जा के स्तर को बढ़ाते हैं। काले, नीले और भूरे जैसे तामसिक रंगों का प्रयोग पूजा कक्ष की दीवारों पर नहीं होना चाहिए। धर्मशास्त्रों के अनुसार कलश को सुख-समृद्धि, वैभव और मंगल कामनाओं का प्रतीक माना गया है। कलश में सभी ग्रह, नक्षत्रों एवं तीर्थों का वास होता है। इनके आलावा ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, सभी नदियों, सागरों, सरोवरों एवं तैंतीस कोटि देवी-देवता कलश में विराजमान होते हैं। वास्तु के अनुसार ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) जल एवं ईश्वर का स्थान माना गया है और यहां सर्वाधिक सकारात्मक ऊर्जा रहती है। इसलिए पूजा करते समय माता की प्रतिमा या कलश की स्थापना इसी दिशा में करनी चाहिए। शक्ति और समृद्धि का प्रतीक मानी जाने वाली पूर्व दिशा की ओर मुख करके पूजा करने से हमारी प्रज्ञा जागृत होती है एवं दक्षिण दिशा की ओर मुख करके पूजा करने से आराधक को मानसिक शांति अनुभव होती है। देवी पूजा-अनुष्ठान के दौरान मुख्य द्वार पर आम या अशोक के पत्तों की बंदनवार लगाने से घर में नकारात्मक शक्तियां प्रवेश नहीं करतीं।



अखंड ज्योति-पूजन सामग्री

नवरात्र के समय देवी मां की पूजा में शुद्ध देसी घी का अखंड दीप जलाने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, नकारात्मक ऊर्जाएं नष्ट होती हैं। इससे आस-पास का वातावरण शुद्ध और सुकून भरा हो जाता है। अखंड दीप को पूजा स्थल के आग्नेय यानि दक्षिण-पूर्व में रखना शुभ होता है, क्योंकि यह दिशा अग्नितत्व का प्रतिनिधित्व करती है। आग्नेय कोण में अखंड ज्योति या दीपक रखने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है तथा घर में सुख-समृद्धि का निवास होता है, रोग एवं क्लेश दूर होते हैं। देवी मां के पूजन में प्रयुक्त होने वाली सामग्री पूजन स्थल के आग्नेय कोण में ही रखी जानी चाहिए।

देवी मां को लाल रंग अत्यधिक प्रिय है। लाल रंग को वास्तु में भी शक्ति और शौर्य का प्रतीक माना गया है अतः माता को अर्पित किए जाने वाले वस्त्र, श्रृंगार की वस्तुएं एवं पुष्प यथासंभव लाल रंग के ही होने चाहिए। नवरात्र पूजा में जौ को बेहद शुभ माना गया है। जौ समृद्धि, शांति, उन्नति और खुशहाली का प्रतीक होते हैं, इन्हें पूजास्थल के पूर्व या उत्तर-पूर्व में रखा जाना शुभफलों में वृद्धि करेगा। वास्तुशास्त्र के अनुसार शंख ध्वनि और घंटानाद करने से देवी-देवता प्रसन्न होते हैं और आस-पास का वातावरण शुद्ध और पवित्र होकर मन-मस्तिष्क को बहुत शांति मिलती है। अनेक वैज्ञानिक शोधों से स्पष्ट हुआ है कि जिस स्थान पर शंख ध्वनि होती है, वहां सभी प्रकार के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

कन्या पूजन की महत्ता

माना जाता है कि नवरात्र के दिनों में कन्याओं को देवी का रूप मानकर आदर-सत्कार करने एवं भोजन कराने से घर का वास्तुदोष दूर होता है। शास्त्रों के अनुसार हवन, जप और दान से देवी इतनी प्रसन्न नहीं होतीं, जितनी कन्या पूजन से प्रसन्न होती हैं। कन्या, सृष्टि सृजन श्रृंखला का अंकुर होती हैं। यह पृथ्वी पर प्रकृति स्वरूप मां शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं। अतः मनुष्य प्रकृति रूपी कन्याओं का पूजन करके साक्षात भगवती की कृपा पा सकते हैं। इन कन्याओं में मां दुर्गा का वास रहता है। कन्या पूजन नवरात्र पर्व के किसी भी दिन या कभी भी कर सकते हैं लेकिन अष्टमी और नवमी को कन्या पूजन के लिए श्रेष्ठ माना गया है। *

22-3-2020HB-Rav-2 final_Layout 1 20-Mar-20 6:39 PM Page 1



कहानी

उर्मिला शिरीष

जब तक पानी मिलता रहा, उसकी कीमत किसी ने नहीं समझी। अब जब पानी के स्रोत सूखने लगे तो उसकी सुरक्षा के लिए उस पर ताले लगने लगे, और उसे पाने के लिए मार-पीट तक की नौबत आ गई। यह कहानी सिर्फ किसी एक गांव, कस्बे या मोहल्ले की नहीं, आने वाले वक्त में पूरी दुनिया की भयावह तस्वीर को दिखाती है।

मीठे पानी का कुंआ



पुलिस उन चारों को गिरफ्तार करके ले गई थी। चारों की गिरफ्तारी। सुनकर हड़कंप मच गया था, ये क्या हो गया? ऐसा नहीं करना चाहिए था। आपस में मिल-बैठकर मामला सुलझा लेना था। जमानत होगी या नहीं। मुकदमा चलेगा। सजा हो गई तो। मामला सुलझता कैसे। पूरा डेढ़ महीना हो गया था। हाहाकार मचा हुआ था। पूरी कॉलोनी के लोग काम-धंधे छोड़कर बस एक ही काम में लगे थे। सोना, खाना-पीना सबसे बेखबर, बस एक ही काम पानी-लाना। पानी भरना। इन कॉलोनियों के बीच में दो कुएं थे। एक इस तरफ, दूसरा दूसरी तरफ। दोनों कुएं धीरे-धीरे सूखते गए। पहले थोड़ा-थोड़ा पानी आता था, चार-छः बाल्टी। बाद में तो यह आलम हो गया था कि तीन बजे से लोग कतार में बैठ जाते थे कि थोड़ा-बहुत पानी आएगा तो मिल-बांटकर ले लेंगे। अब झिर्री से भी पानी आना बंद हो गया था। लोग रस्सी के सहारे कुएं में उतर आते और चुल्लुओं से पानी उलीचकर अपनी प्यास बुझाते। बारिश आने तक अब ये कुआं बेकार हो गया था। तीन बार उसे गहरा करवाया जा चुका था। लेकिन अब और गहरा करने की गुंजाइश नहीं बची थी। दूसरा कुआं गांव के दूसरे छोर पर था, जहां दोनों कॉलोनी के लोग पानी भरा करते थे। इस कुएं का पानी मीठा था। इसलिए इसका नाम ही 'मीठे पानी का कुआं' पड़ गया था। इस कुएं की आवभगत, देखभाल महाराजा की तरह होती थी। आस-पास चौड़ी जगत बनी थी। कुएं के मुंह पर जाली लगा दी गई थी ताकि कोई जानवर उसमें न गिर सके। जहां से पानी निकाला जाता था, वहां का ढक्कन खोलकर लोग पानी भरते थे। इसमें कोई भी गंदी बाल्टी या घड़ा नहीं डाल सकता था। साफ, मंजी...पीने वाली बाल्टी और घड़ा ही इसमें पानी निकालने के लिए डाल सकते थे।

आज जब कॉलोनी के लोग पहुंचे तो देखा जाली पर ताला लगा हुआ था। कुएं की जाली पर ताला। लोग आवाक् रह गए। हाय-हाय करने लगे। कलयुग में पानी के कुएं पर ताला लगेगा, यह तो होना ही था। अभी तक तो घरों में, तिजोरियों और बक्सों में ताला लगा करता था। लोग घरों तक में कुंडी या ताला लगाकर काम पर निकल जाते थे, लेकिन पानी के कुएं पर ताला!

'ये किसने हरकत की होगी?'

'पानी तो सबके लिए है।'

एक-दूसरे से पूछते जानकारी लेते लोगों ने हंगामा मचाते हुए ताला तोड़ दिया। ताला तोड़ने की घटना ने गांव की कॉलोनियों को दो गुटों में बांट दिया।

'कहा था पानी बचा कर रखा करो।'

'कौन नहीं रखता?'

'तुम्हारे यहां पानी बहता रहता था।'

'कब.. किसने देखा?'

'यहां तक पानी बहकर आता था।'

ऐसी बातों पर हमेशा विवाद होता रहता था। कौन कितना पानी बर्बाद करता है? कौन अपनी गाड़ियां धोता है? कौन अपने मवेशियों को नहलाता है....ऐसी बहसें, आरोप-प्रत्यारोप चलते रहते थे। लोग भूलकर फिर एक-दूसरे के साथ खड़े हो जाते थे। लोगों ने आस-पास के हैंडपंपों में, नदी-नाले में बावड़ियों में पानी खोज डाला था, पर कहीं भी पानी नहीं था। पानी के इतिहास के चिन्ह भर देखने को मिले थे। समस्या ने भीषण रूप धारण कर लिया था। टैंकर के लिए फोन किया जाता.. हर घंटे, हर रोज फोन करते, तब कहीं जाकर हफ्ते में एकाध बार टैंकर आता...। टैंकर के आते ही भीड़ टूट पड़ती। लोग एक-दूसरे पर झपट पड़ते। धक्का-मुक्की, गाली-गलौज..बर्तनों की उठा-पटक के बीच... जितना पानी मिल पाता, लोग उसी से संतोष करके काम चलाने की कोशिश करते। मवेशियों और परिंदों का बुरा हाल था। खेत सूख चुके थे और सूखे खेतों में केवल प्यास से मरे पक्षियों की लाशें या प्यासे मवेशियों की भीड़ दिखाई देती थी।

सुशीला तीन दिनों से काम पे नहीं जा पा रही थी, क्योंकि सुबह तीन बजे से लाइन में बैठना पड़ता था।

'घर में एक बूंद पानी नहीं है। एक हफ्ते से नहाए नहीं हैं। बीस दिन के बासी कपड़े रखे हैं। **घर में मां जी को भी पानी लगता है।** मैडम जी के घर से दो बोतल पानी लाई थी।'

'मैंने तो इसी बात पर एक मैडम का काम छोड़ दिया था कि वह हमेशा पानी को लेकर चीक्-चीक् किया करती थी। नल से इतनी धार क्यों बह रही है, कपड़े धोने में इतना पानी क्यों खर्च हो रहा है? किसी को पानी दो तो आधा गिलास पानी निकाल लेती थी। आज पता चला कि वे ऐसा क्यों करती थी।' दूसरी औरत बोली।

'कितनी जगह पाइप लाइनें टूट गईं...पानी बहता रहता है। तब सरकार नहीं देखती। हमको घंटों पानी के लिए तरसना पड़ता है।' तीसरी औरत बोली।

'आज टैंकर आना चाहिए' चौथी औरत ने जंभाई लेते हुए कहा।

'दो बजे आने का बोल रहा था' पांचवीं औरत ने आसमान की तरफ देखते हुए कहा।

'दो बजे तक इंतजार करना पड़ेगा।' छठवीं औरत ने थकते हुए कहा।

'एक कुआं जो अजीत भाई साहब का है, पता है वहां क्या किया?' सातवीं औरत ने फुसफुसाते हुए कहा।

'ताला लगा दिया था। सबने ताला तोड़ दिया। फिर क्या, इतना हंगामा मचा कि सिर फूटने की नौबत आ गई थी।' आठवीं औरत ने बात को आगे बढ़ाया।

'उस कुएं में पानी है।' एक अन्य औरत की उत्सुकता बढ़ गई। 'थोड़ा बहुत है। पर उसने ताला डाल रखा है।' सुशीला ने सबकी बात झटकते हुए कहा।

सुबह से ही भूखी-प्यासी, बिना नहायी, गंदे कपड़े पहने महिलाएं, तपती धूप में पानी के टैंकर का इंतजार कर रही थीं। पर टैंकर था कि दूर-दूर तक दिखाई नहीं दे रहा था। ऊपर आग बरसाता आसमान था। नीचे लावा फेंकती धरती। सूखी....गरम धरती। उजाड़ धरती। खाली बर्तन मुरझाते चेहरे। प्यास से फड़फड़ाते होंठ। भूख से मरोड़ खाते पेट। किसी को चक्कर आ रहे थे, तो कोई बेहोश होने की अवस्था में पहुंच रहा था। 'लगता है अब नहीं आएगा।' एक साथ कई लोग बोले। दूर बर्तनों की लंबी, बहुत लंबी कतार को देखते हुए सुशीला बोली-'इसका क्या होगा?'

'चलो मीठे कुएं पर चलते हैं।' किसी ने कहा।

'थोड़ा बहुत पानी तो मिलेगा।' दूसरे ने खाली बाल्टी उठाते हुए कहा।

'यह बर्तन यहीं रहने दो, छोटे-छोटे बर्तन ले चलो।' भीड़ का एक रेला मीठे कुएं की तरफ बढ़ने लगा। करीब 15 किलोमीटर दूर था मीठा कुआं। एक-एक कदम बढ़ाते लोग अंदर ही अंदर एक-दूसरे से आगे निकल जाना चाहते थे। वे इस समय स्वयं केवल और स्वयं के बारे में सोच रहे थे। अपने दिनों, घंटों और मिनटों का हिसाब लगा रहे थे, इतनी लंबी प्यास, उन्होंने जीवन में पहली बार झेली थी।

भीड़ मीठे कुएं को घेर कर खड़ी हो गई। जाली से झांककर देखा, शांत, निर्मल पानी जो चुपचाप था। लेकिन पानी बहुत नीचे चला गया था। कुएं की भीतरी दीवार पर छोड़े गए पानी की रेखा दिखाई दे रही थी। भीड़ असमंजस में खड़ी थी। ताला तोड़ा जाए। तोड़ ही देना चाहिए। चार-पांच युवक आगे बढ़े, पत्थर, सरिया और कुल्हाड़ी से ताले के ऊपर प्रहार करने लगे, दूसरे युवक जाली उखाड़ने में अपनी पूरी शक्ति लगा रहे थे। जाली पुरानी थी। कुएं की दीवारों में सरिया के साथ लगी हुई थी। जब तक दीवार को न तोड़ा जाएगा, तब तक जाली को उखाड़ना असंभव था। जाली टूटने की आवाज सुनकर दूसरी कॉलोनी के लोग दौड़कर आए.., 'क्या कर रहे हो?' एक आदमी ने पूछा।

'दिख नहीं रहा है जाली तोड़ रहे हैं।' दूसरा आदमी बोला।

'क्यों..।' उस आदमी की आवाज तेज हो गई।

'पानी चाहिए।' दूसरा आदमी भी तेज आवाज में बोला।

'पानी कहां है... ऊपर से थोड़ा दिख रहा है, देखो नीचे, मिट्टी, कंकड़ दिख रहे हैं देखो।' तीसरा आदमी कुएं में झांकते हुए बोला।

'जितना है उतना तो लेने देते।' चौथा आदमी बाल्टी में रस्सी बांधने लगा।

'नहीं मिलेगा..।' सामने वाले लोग दीवार बनकर खड़े हो गए।

'हटो, ताला खोलो.. वरना तोड़ देंगे।' इधर की भीड़ उग्र हो उठी।

'तोड़कर दिखाओ।' उधर की भीड़ उनसे ज्यादा उग्र हो उठी।

'भइया, थोड़ा पानी लेने दो, गला सूख रहा है, गला सूख रहा है। चार दिन से पानी नहीं मिला। आपकी मेहरबानी होगी।' महिलाओं ने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

'है ही नहीं तो कहां से दे दें।' एक युवक चिल्लाकर बोला।

'नहीं होता तो हम जोर-जबरदस्ती नहीं करते' दूसरा युवक उससे भी ज्यादा चिल्लाकर बोला।

ताला लगभग टूटने ही वाला था कि पीछे से उन युवकों ने इन युवकों पर लाठियां बरसानी शुरू कर दीं, 'जबरदस्ती मचा रखी है। तुम्हारे बाप का कुआं है? साले चले आते हैं।' और देखते ही देखते दोनों पक्ष भिड़ गए। लाठी, लात, घूंसा बरसाने लगे। पत्थर उठाकर मारने लगे। महिलाएं अपनी जान बचाने के लिए उल्टी दिशा में भागने लगीं। सुशीला बीच-बचाव कर रही थी। किसी के धक्के से जमीन पर गिर पड़ी। चारों तरफ चीख-चिल्लाहट मची थी। कइयों के सिर से खून बह रहा था। कई लोग हाथ-पांव में लगी चोट से कराह रहे थे। पानी में पड़ते छींटे, कंकड़, पत्थर से रुका पानी, हिलने लगा। उखड़ी जाली का एक सिरा कुएं में लटक रहा था और दूसरा बाहर निकला हुआ था। पानी ने डरकर अपने को छुपाना चाहा, लेकिन हिलोरे लेता पानी, फिर नीचे उतरने लगा। ऊपर अब तक शोर-शराबा मचा था। थोड़ी देर में ही पुलिस की गाड़ी आ गई और चार लोगों को पकड़ कर ले गई। पुलिस की गाड़ी वापस चली गई थी। भीड़ तितर-बितर हो गई। पानी ने देखा, सुना ऊपर कुएं के मुंह पर फिर से कोई टूटा सरिया ठोंक रहा था। ताला लगा था। किसी ने कहा, 'सालों ने सारा पानी गंदा कर दिया, देखो तो खून बहकर कुएं में गिर गया है..उफ्फ। अब कौन पिएगा इस पानी को। छोड़ो मत लगाओ ताला..।' कहते हुए वे लोग लौट गए। भारी ताला धम्म से पानी की छाती पर गिरा।

डुब...डुब...डुब...डुब..ताला डूब गया। बुलबुले उठते रहे। यह बुलबुले नहीं पानी की कराह थी। पानी कराह रहा था। डुब, डुब, डुब। देर तक सन्नाटा छाया रहा। भय का माहौल बना रहा। पानी थोड़ा ऊपर आया..। कुएं की दीवार से टकराया और उदास होकर बोला, 'मानुष, तेरा खून इतना गंदा क्यों हो गया कि पानी में मिलने पर पानी को ही त्याग दिया है।' *

उर्दू के मशहूर शायरों में जोश मलीहाबादी का नाम भी दर्ज है। अपने जीवन के पहले मुशायरे में उन्हें कैसे दिलचस्प अनुभव हुए, इसका जिक्र उन्होंने अपनी आत्मकथा में किया है। यहां पढ़िए उसका एक अंश।

पहला मुशायरा

पुस्तक अंश



यह शायद 1910 या 1911 की बात है कि मैं अपने बाप के हमराह हजरत मौलाना रजा फिरंगी महली के मुशायरे में पहली बार शरीक हुआ और दंग रह गया। आइए, मैं आपको मुशायरे में ले चलूं ताकि आप खुद देख लें कि शफ्फाक चांदनी बिछी हुई है, चांदनी पर कालीन है। गावतकिए दीवारों से लगे हुए हैं। इधर-उधर साफ-सुथरे उगालदान, नेचों में हार लिपटे हुक्के, शालबाफ से मढ़ी हुई छोटी-छोटी कोरी हांडियां, हांडियों में चांदी के वरक की सुगंधित गिलोरियां और इलायची दाने, तंबाकू और किवाम की डिब्बियां रखी हुई हैं। शायद ज्यादातर अंगरखे और कमतर शेरवानियां पहने अपने-अपने मर्तबे के लिहाज से दोजानू बैठे हुए हैं। सबके सरों पर टोपियां हैं।

श्रोताओं में से कोई भी नंगे सर नहीं है। आपस में आहिस्ता-आहिस्ता बातें हो रही हैं, गिलोरियां खाई और हुक्के पिए जा रहे हैं। और जो शायर मुशायरे के फर्श पर कदम रखता है, वह हाजिरीन को झुक-झुककर सलाम कर रहा है। हाजिरीन उसके मर्तबे के मुताबिक नीमकद या सरूकद जवाबी सलामों से उसका स्वागत कर रहे हैं। लीजिए अब मीरे-मुशायरा के सामने शम्अ आ गई और मौलाना रजा की गजल से मुशायरे का आगाज हो रहा है और दाद से छत गूंजने लगी है। किसकी मजाल है कि गजल पढ़ने के दौरान कोई मिसरा न उठाए, हुक्का पी ले, पान खा ले, आपस में सरगोशी करने लगे या कोई इधर से उठकर बैठ जाने की जसारत कर सके। मीरे-मुशायरा के बाद शम्अ घूम रही है। नौ-मश्क नौजवानों की सफों में और कमी-बेशी के साथ सबको दाद मिल रही है और मामूली शे'रों के सरों पर भी 'माशा अल्लाह' के सेहरे बांधे जा रहे हैं। लीजिए, नौ-मश्कों में अब मेरी बारी आ गई। अरे गजब हो गया। शम्अ सामने रखी हुई है, रोबे-महफिल से मैं कांप रहा हूं। शायरों की सफों से आवाजें आ रही हैं-बिस्मिल्लाह, साहबजादे बिस्मिल्लाह! लेकिन साहबजादे का दम निकला हुआ है। क्या मजाल कि मुंह से एक हर्फ भी निकल सके। अब मेरे बाप मुझसे फरमा रहे हैं, 'पढ़ते क्यों नहीं? पठान का बेटा तो बारह बरस की उम्र ही से रण में तलवार चलाने लगता है। और एक तुम हो कि तुमसे गजल नहीं पढ़ी जा रही है।' अब मिर्जा मुहम्मद हादी साहब रुसवा अपनी जगह से उठकर मेरे पहलू में आ गए हैं और मेरी पीठ ठोंककर फरमा रहे हैं-'साहबजादे आप तो शायर, शायर के बेटे, शायर के पोते और शायर के परपोते हैं, पढ़िए और गरजकर पढ़िए।' अब बड़ी हिम्मत करके मैं मतला (गजल का पहला शे'र) पढ़ रहा हूं। मतला पर दाद मिल रही है! और दाद के नशे में शे'र पढ़ रहा हूं-

ऐ नसीमें-सुबह के झोंको, यह तुमने क्या किया
मेरे मस्ते-ख्वाब की जुल्फें परेशां हो गईं।

इस शे'र पर मतला से ज्यादा दाद पर रहा हूं। और वलवले के साथ दूसरा शे'र सुना रहा हूं-

मेरी आंखें जानती हैं
करबे इफराते खुशी
खंदाजन देखा किसी को
और गिरियां हो गईं।

अब दाद का गलगला ज्यादा बुलंद हो रहा है और 'सुब्हान अल्लाह, माशा अल्लाह' से मुशायरा गूंज रहा है। मिर्जा मुहम्मद हादी रुसवा, हजरते-सफी से कह रहे हैं, 'देखे आपने इस शे'र के तेवर, यह उम्र और इतनी गहरी बात!' और अब मैं आखिरी शे'र पढ़ रहा हूं-

हाय मेरी मुश्किलों, तुमने भी क्या धोका दिया ऐन दिलचस्पी का आलम था कि आसां हो गईं।

देखिए छतें उड़ रही हैं और धुएं पार हो रहे हैं। इस शे'र की दाद से, और उस्ताद फरमा रहे हैं-अल्लाह नजरे-बद से बचाए। मुशायरे से दाद का बड़ा जाम पीकर झूमता-झामता घर आया। खुशी के मारे देर तक नींद नहीं आई। और सो गया तो ख्वाब में रात-भर यह देखता रहा कि परियां भींच-भींचकर मुझे गले लगा रही हैं। सुबह उठते ही नहाया और नाश्ते से फारिग होकर जब अपने बाप की ख्वाबगाह के बरामदे से होकर गुजरने लगा तो बाप की आवाज आई, 'इधर आइए जनाब!' दम निकल गया इस आवाजे-गजब से। जब मैं लरजता हुआ उनकी ख्वाबगाह में गया तो उन्होंने बड़ी भारी आवाज में इरशाद फरमाया, 'देखिए साहब, यह मेरी दिली तमन्ना है कि आप इस दुनिया में फूलें-फूलें, आपकी दौलत मेरी दौलत से बढ़ जाए, आपका मर्तबा मुझसे हजार गुना ऊंचा हो जाए, आप जिंदगी के हर शोबे (क्षेत्र) में मुझसे आगे बढ़ जाएं, मगर कान खोलकर सुन लीजिए कि मैं इसे बरदाश्त नहीं कर सकता कि खां साहब आप मुझसे शायरी में भी बढ़ जाएं। रात के मुशायरे में आपको मुझसे ज्यादा दाद मिली। अब आपका मेरे साथ मुशायरे जाना बंद-कतई बंद। गजब खुदा का, बाप से ज्यादा बेटे को दाद मिले। मैं यह उल्टी गंगा बहने का मौका नहीं देने का-सुना खां साहब आपने!' मेरे बाप मीर को गालिब पर तरजीह देते थे। हल्की-फुल्की जबान में शे'र कहते और दाग के इस शे'र पर अमल करते थे-

कहते हैं उसे जबाने-उर्दू
जिसमें न हो रंग फारसी का।

एक रोज मैंने उनकी खिदमत में अपनी एक गजल इस्लाह के लिए पेश की, जिसमें जा-बजा फारसी तरकीबें थीं और एक मिसरा था-

हमारी जिंदगी यानी वफाए-राजदां तक है उन्होंने त्योरियों पर बल डालकर फरमाया, 'सुब्हान अल्लाह, यानी वफाए-राजदां तक है। इस 'यानी' की दाद नहीं दी जा सकती। मुझे इस बात का शदीद खौफ है कि तुम कुछ दिन में 'शुमारे-सुब्हा-ए-मरगूब-बुत-मुश्किल पसंद आया' (गालिब) तक आ जाओगे। ना साहब, मैं तुम्हें इस्लाह नहीं दूंगा और तुम्हें अजीज साहब के सुपुर्द कर दूंगा। वह भी 'यानी वफाए राजदां' और 'शुमारे-सुबहा' के बरतने वालों में से हैं। दोनों में खूब निबाह हो जाएगा।' उन्होंने अजीज साहब को बुलाकर मुझे उनका शागिर्द बना दिया और शागिर्दी-उस्तादी का यह सिलसिला छह बरस के अंदर ही टूट गया। इसमें कोई शक नहीं कि अजीज साहब बहुत ही अच्छे उस्ताद और बहुत ज्ञानी बुजुर्ग थे। जहां तक जबान की सेहत और लहजे की नजाबत का तअल्लुक है, उनसे मुझे बहुत ज्यादा फायदा हासिल हुआ। जब मुझे साफ तौर पर यह महसूस होने लगा कि मेरे चिंतन की राह उनसे मुख्तलिफ है और हम दोनों की कल्पना एक ही सम्त में सफर नहीं कर रही है, और उनकी इस्लाहों से शे'रों का लफ्जी रंगों-रोगन तो जरूर उभर आता है लेकिन मानवीयत (भावार्थ) धुंधली होकर रह जाती है तो मैंने इस्लाम लेना छोड़ दिया।

लेकिन इससे मेरे और उनके तअल्लुकात में किसी किस्म की तल्खी राह नहीं पा सकी। मैं हमेशा उनके रू-ब-रू सर झुकाता और वह हमेशा मेरे सर पर हाथ फेरते रहे। *

(राजपाल एंड संस से प्रकाशित जोश मलीहाबादी की आत्मकथा 'यादों की बरात' का एक अंश)

देखा जाए, तो आज बहुत कुछ दुआओं के हवाले हो गया है। आप घर से निकल रहे हैं, घर लौट आने की दुआएं मांग सकते हैं। सब्जी मंडी जा रहे हैं, दुआएं लेते जाइए। काम पर निकल रहे हैं, दुआओं के साथ ही निकलिए, संबल रहेगा।



व्यंग्य

सुरजीत सिंह

दुआओं की दरकार



एक मित्र ने कल फेसबुक पर संक्षिप्त सूचना देकर गुहार लगाई, 'कल ऑपरेशन कराने अस्पताल में दाखिल हो रहा हूं, दुआएं चाहिए आपकी!' साफ है, उन्हें दवाओं से ज्यादा दुआओं पर भरोसा है। वैसे भी जिस तरह अस्पताल पेशेंट के साथ प्रयोग पर आमादा हुए हैं, वहां दुआएं ही काम आ सकती हैं। उनकी करुण गुहार पर द्रवित होकर मैंने फौरन दुआएं दी। नहीं देने पर अस्पताल का तो कुछ नहीं बिगड़ता, कुछ अप्रिय होने पर मुझ पर इल्जाम आ सकता था! फोन पर देता, तो शायद दुआएं कुबूल नहीं होतीं। फिर मित्र के नाराज हो जाने का भी डर था। जब डिमांड सार्वजनिक है, तो दुआओं की गोपनीयता क्यों! एकांत की दुआओं का क्या ऐतबार, देने वाला चुपके से बद्दुआएं दे जाए और परिणामस्वरूप बंदा अस्पताल से लौटकर ही नहीं आए! इसलिए लोग आजकल रिस्क नहीं लेते! खुल्लम-खुल्ला साधिकार लेते हैं- देनी है तो यहीं दें, सबके सामने। इससे यह अनुमान भी हो जाता है कि कितने प्रतिशत लोग चाहते हैं कि आपका ऑपरेशन सफल हो, आप स्वस्थ-सानंद घर लौटें। दुआओं का कठिन इम्तिहान है। ठीक-ठाक मात्रा में लोगों ने उनकी कामना के अकाउंट में दुआएं डिपॉजिट कीं। उन्होंने दुआओं के सहारे खुद को अस्पताल के हवाले किया और ऑपरेशन टेबल पर लेट गए।

लोगों का दवा-दारू पर से भरोसा उठता है, तो दुआओं की दरकार होने लगती है। शायद ऐसा दौर आ चुका है, जब हर प्रॉब्लम की दवा, अब दुआ में ढूंढ़ा जा रहा है! बच्चों का हैप्पी बड्डे है। मां-बाप दुआओं के लिए विकल हैं। उनकी पुरजोर मांग है कि आपके इस लाड़ले को दिल खोलकर दुआएं दीजिए। जॉब लग गई, तो वर्चुअल मुंह मीठा कीजिए और असली वाली दुआएं निकालिए। शादी की गोधूलि वेला आई है! माफ कीजिएगा, दुआएं हर्गिज नहीं चलेंगी, अभी सिर्फ शुभकामनाएं ही स्वीकार्य होंगी। शादी की अलसभोर में उन्हें सब कुछ शुभ-शुभ ही लगेगा। एकाध साल बाद जब कामना के फूल मुरझाने लगेंगे, तब हो सकता है, वे शादी में मिली शुभकामनाओं के गुलदस्ते को बाहर फेंक दें और दुआओं की भावुक अपील जारी करें।

शादी की सालगिरह है! उन्होंने बाकायदा सूचना लगाकर दुआएं देने की गुहार लगाई। लगाई क्या, पब्लिक की अदालत में याचिका डाल दी। फौरन सुनवाई हुई और उनकी मांग पर दुआओं की खासी आपूर्ति सुनिश्चित हुई। मैरिज एनिवर्सरी जैसी मार्मिक अपीलों पर लोग दिल खोलकर देते भी हैं। पता है, यह सालगिरह तो उनकी भी आने वाली है। गांठ तो एक और उनके वर्ष में भी पड़ने वाली है। कहते भी हैं, जब पीर पर्वत सी हो जाती है, तो दुआओं के अलावा किसी और चीज पर भरोसा नहीं होता।

देखा जाए, तो आज बहुत कुछ दुआओं के हवाले हो गया है। आप घर से निकल रहे हैं, घर लौट आने की दुआएं मांग सकते हैं। सब्जी मंडी जा रहे हैं, दुआएं लेते जाइए। काम पर निकल रहे हैं, दुआओं के साथ ही निकलिए, संबल रहेगा। सरकार चुनने जा रहे हैं, दुआएं लेना मत भूलिए कि जिसे चुनें, सही निकल सके। पिक्चर देखने जा रहे हैं, तो भी दुआओं के बिना हर्गिज मत निकलिए।

दुआएं अब मांगकर ली जाने लगी हैं। कोई दे या ना दे, मांग लो, अधिकारपूर्वक। हो सकता है, कुछ दिन बाद बलपूर्वक भी ली जाएं। अब हमारे अंदर इतनी सदाशयता, विनम्रता, दयालुता, बड़प्पन बचा कहां है कि दुआएं देने के लिए दिल के दरवाजे खोल सकें। दिलों का साइज इस कदर छोटा हो गया है कि लगता है, दे देने से अपनी कुछ कम हो रही हैं। ऐसी जगहों से दुआएं मांगकर या छीनकर ही ली जा सकती हैं। मांगकर सामने वाले को इतना शर्मिंदा कर दो कि बंदा दुआएं देने को मजबूर हो जाए। मैं तो दुआओं के अगले स्टेप की सोच रहा हूं, जब लूट कर ली जाने लगेंगी, इसके बाद कूट कर भी संभव है।

अनंत विस्तार की संभावना बन रही है। मेरी कल्पना यहां तक जा रही है कि जिस दिन मुझे इस दुनिया से टैं बोलना होगा, शायद पहले स्टेटस अपडेट करूं कि श्रद्धांजलि चाहिए आपकी! श्रद्धांजलि देखकर संतोष से दुनिया छोड़ सकूंगा, बाद की दुविधा ही नहीं रहेगी-किसने दी, किसने नहीं! हो तो यह भी सकता है कि इतनी श्रद्धांजलि देखकर मरने का विचार ही कैंसिल हो जाए!

खैर! फिलहाल दुआएं तो मुझे भी चाहिए। दुआएं दीजिए कि इस व्यंग्य पर संपादक का दिल आ सके! *

22-3-2020HB-Rav-3 final_Layout 1 20-Mar-20 6:39 PM Page 1





आचार्य डॉ. गोविंद बल्लभ जोशी

22 मार्च से 28 मार्च तक

विशेष

25 मार्च नवसंवत्सर 2077 प्रारंभ। संवत्सर नाम- आनंद। यह अधिकांश लोगों के लिए सुख-समृद्धि लेकर आ रहा है। सौर मंडल की परिषद में इस वर्ष का राजा बुध और मंत्री चंद्र है। दोनों ग्रह प्रकृति और प्रजा के लिए शुभ कारक हैं।

साप्ताहिक व्रत एवं पर्व

- 24 मार्च- अमावस्या
- 25 मार्च- नवरात्र प्रारंभ गुड़ी पड़वा
- 26 मार्च- झूलेलाल जयंती
- 27 मार्च- गणगौर पूजन

साप्ताहिक सुविचार

संसार का समस्त वांगमय ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, बोलियां, भाषाएं एवं ध्वनियों में भगवती पराम्य भवानी दुर्गा का भेद है। संसार की समस्त स्त्रियों में उसी आदिशक्ति का स्वरूप है। संसार में उस आदिशक्ति से रहित कुछ भी नहीं है। जड़-चेतन की उस अधिष्ठात्री को बारंबार प्रणाम है। 'नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:'

मेष

धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी, पारिवारिक उन्नति का योग है। नए रिश्ते, संबंधों की बात चलेगी। मन गुप्त चिंताओं से विचलित हो सकता है। भगवती दुर्गा की आराधना हितकर रहेगी। वाणी पर संयम बनाए रखना आवश्यक है। बिना सोचे समझे प्रतिउत्तर न दें। इससे बनते काम बिगड़ सकते हैं।

वृष

धन प्राप्ति के नए मार्ग उपस्थित होंगे। मंगल मिलन धार्मिक उत्सवों में व्यस्तता रहेगी। यात्रा प्रसंग बनेंगे। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। उपहार एवं सम्मान राशि मिल सकती है। कानूनी विवादों में सफलता का योग है। अधिक भाग-दौड़ से मानसिक परेशानी हो सकती है।

मिथुन

चल-अचल संपत्ति प्राप्ति का योग है। प्रेम प्रसंगों में समय बीतेगा। स्त्री मित्र से लाभ का अवसर है। स्वास्थ्य लाभ एवं कर्जे से मुक्ति का योग बन रहा है। अचानक यात्रा का योग बन सकता है। अति उत्साह में विवेक न छोड़ें, अन्यथा मान के स्थान पर अपमान का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क

इन दिनों आपकी राशि में ग्रहों की चाल उत्तम है। किसी भी कार्य में हाथ डालेंगे, सफलता सम्मुख रहेगी। स्वार्थी स्वभाव बन सकता है। लेकिन परमार्थ भावना मन को संतुलित कर देगी। धार्मिक कार्य एवं किसी पारिवारिक मांगलिक कार्य होने का संयोग है। तन, मन और धन से दूसरों के सहयोग का मन बनेगा।

सिंह

भाग्योदय का समय है। आलस्य और बेपरवाही से काम में रुकावट आ सकती है। नए कार्यों की शुरुआत होगी। भाई या पारिवारिक बंधुओं का सहयोग मिलेगा। पारिवारिक संतुलन बनाए रखना होगा। लंबी यात्रा का योग है। नौकरी-पेशे में नए आयाम दिखाई देंगे। मित्र सहयोग करेंगे।

कन्या

परिश्रम की अपेक्षा लाभ कम हो सकता है। विवादों से बचें। काम-धंधे में उलझनों से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। लेकिन धार्मिक यात्राओं से सुख-शांति प्राप्त होगी। बीमारी से निजात मिलेगी। साहित्य सृजन एवं गीत-संगीत के प्रति रुझान बढ़ेगा। शिव-शक्ति की आराधना से लाभ-प्राप्ति होगी।

तुला

तुरंत निर्णय नहीं ले पाने से किसी कार्य में रुकावट आ सकती है। लेकिन कालांतर में कार्य सिद्धी का योग है। रुका हुआ धन मिलेगा। सर्विस क्लास लोगों को मानसिक तनाव से गुजरना पड़ सकता है। अपने कार्यक्षेत्र या कार्यालय में मन-मुटाव की स्थिति आ सकती है। भगवद् आराधना से रुकावट दूर होगी।

वृश्चिक

दूसरों के कार्यों को बेहतर बनाने में रुचि लेंगे, जिससे मान-सम्मान मिलेगा। स्वयं के प्रति आलसी रहना सफलताओं में विलंब का कारण बनेगा। विवाद अथवा झगड़ों से दूर रहना लाभदायक रहेगा। आपसी रिश्तेदारों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें। पारिवारिक कलह से बचें। वाहन नियंत्रित होकर चलाएं।

धनु

लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होंगे। बाधाएं उपस्थित होंगी लेकिन अधिक समय तक नहीं टिक पाएंगी। यात्रा प्रसंग बनेंगे। दान, पुण्य, यज्ञ अनुष्ठान में समय बीतेगा। पारिवारिक जनों का सहयोग मिलेगा। नौकरी-पेशा में उन्नति का योग दिखाई दे रहा है। आने वाला समय कई तरह से शुभ होगा।

मकर

धार्मिक वृत्ति रहेगी। लंबी यात्रा का योग है। पुराने विवाद समाप्त होंगे। वाद-विवाद में जीत के संकेत मिल रहे हैं। परिश्रम का फल मिलेगा। मित्रों की सलाह हितकर रहेगी। पारिवारिक गतिविधियों में भाग-दौड़ का समय है। किसी मांगलिक कार्य की ओर बढ़ेंगे, मन प्रसन्न रहेगा। किसी शुभ कार्य के लिए उत्तम समय है।

कुंभ

कानूनी कार्यों में सफलता के संकेत मिल रहे हैं। धार्मिक अनुष्ठानों में संलग्न रहेंगे। मन में कभी विरक्ति तो कभी अनुराग के भाव आएंगे। लेकिन मित्र के मिलन से मन की प्रसन्नता बढ़ेगी। संतान सुख एवं माता-पिता के सहयोग का सुयोग है। परिवार-रिश्तेदारों से कोई सुखद समाचार प्राप्त होगा।

मीन

आने वाले समय में किसी क्रांतिकारी कार्य की ओर मन अग्रसर होगा। कर्म और भाग्य दोनों सफलता को सकते हैं। मन में उत्तेजना से किसी कार्य में अचानक रुकावट आ सकती है। लेकिन विवेक से कार्य संपन्न होंगे। तीर्थ यात्रा अथवा पूजा-पाठ में समय का सदुपयोग होगा। *

जिस जल के बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना संभव नहीं हो सकती, उसी की पूरी दुनिया में बर्बादी हो रही है और उसे प्रदूषित भी किया जा रहा है। अपने देश में स्थिति और भी चिंताजनक है। ऐसे में यह सवाल उठता है कि हम सब इसकी महत्ता को समझकर आखिर कब सकारात्मक और प्रभावी कदम उठाएंगे?

कब समझेंगे हम पानी की कीमत

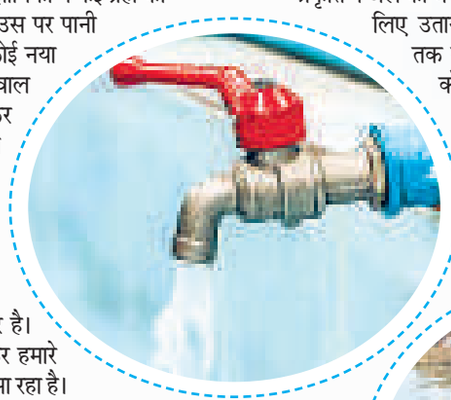


विश्व जल दिवस-22 मार्च
विशेष

विचारणीय

सरस्वती रमेश

आपने क्या कभी ऐसे समय की कल्पना की है, जब धरती पर एक बूंद भी पानी उपलब्ध न होगा? न पीने को, न नहाने को और न ही जीवन के अन्य कार्यों के लिए। क्या मनुष्य और विज्ञान इतने सक्षम हो चुके हैं कि जल जैसी अनमोल चीज बना सकें या उसका कोई विकल्प सुझा सकें? हकीकत तो यह है कि वैज्ञानिकों ने कई ग्रहों की खोज अवश्य कर ली है किंतु उस पर पानी नहीं खोज पाए हैं। पानी का कोई नया स्रोत नहीं ढूंढ़ पाए हैं। फिर सवाल उठता है कि इस सच को जानकर भी हम सब अपनी विनाशकारी नीतियों, गलत जीवनशैली के कारण पानी को खत्म करने पर क्यों तुले हुए हैं?



पानी से रिश्ता

पानी तो हमारे जीने का आधार है। पानी उपभोग की वस्तु न होकर हमारे जीवन, हमारी संस्कृति का हिस्सा रहा है। हमने जलस्रोतों की पूजा की। उसकी जीवनदायिनी शक्ति पर आस्था रखा। पानी को नदियों, तालाबों, बावड़ियों, कुओं में सहेजा। हर बूंद का सदुपयोग कर उसकी महत्ता को समाज में बांटा। जब तक हमने इस जलसंस्कृति को बचाए रखा, तब तक हमारे जलस्रोत पानीदार बने रहे। लेकिन जब से हमने पानी को उपभोग की वस्तु बना उसका दोहन शुरू किया तब से पानी से अपने रिश्ते को भी खत्म कर लिया।



पानी से यह रिश्ता खत्म होने का भयावह परिणाम सामने है। आज दुनिया स्वच्छ पेययोग्य पानी की कमी के गंभीर संकट से जूझ रही है। कहा जा रहा है कि अगला विश्व युद्ध हुआ तो वह पानी को लेकर होगा। कहीं यह शंका सही साबित न हो जाए! नदियों के प्रवाह में बाधा धरती पर स्वच्छ जल का सबसे बड़ा स्रोत नदियां रही हैं। पृथ्वी पर जल की उपलब्धता बनाए रखने के लिए यह जरूरी था कि नदियों को उनके मूल स्वरूप में रहने दिया जाता। मूल स्वरूप में बह रही नदी में कभी पानी की कमी नहीं होती। हमारे देश में सदियों से नदियां अविरल बहती रही थीं। लेकिन हमने उसका मोल नहीं समझा। नदी से पहले अपनी जरूरत भर के लिए पानी लिया फिर अपने सुख के लिए उनका रुख मोड़ा और फिर अपनी लालसाओं के लिए उसे जगह-जगह से रोक कर विद्युत उत्पादन के नाम पर उनका प्रवाह रोक दिया, उनको बांध दिया। हमने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि जब हम किसी नदी के साथ ऐसा करते हैं तो उसके साथ अनेक जीव जंतु, जलचर, पक्षी, जानवर और अंत में मनुष्यों के लिए भी संकट पैदा हो हो जाता है।

विषाक्त होता पानी

प्रकृति ने जल को धरती पर जीवन देने के लिए उतारा। सदियों से अब तक जल ने अपने कार्य को निस्वार्थ अंजाम दिया। लेकिन अब हमने जल का शोषण कर उसकी समस्त शक्तियों को सोख लिया है। जल कल तक जीवन देता था लेकिन आज वही जल दूषित होकर जीवन लेने लगा है। आज गंगा, यमुना, गंडक समेत सभी नदियां बुरी तरह प्रदूषित हो चुकी हैं। नतीजा पानी बाजार की वस्तु बन गया। नल में 24 घंटे आने वाला पानी अब बोतलों में भर-भर कर बेचा जाने लगा। पानी आम आदमी से दूर मुनाफाखोरों की गिरफ्त में पहुंच गया और हम बड़ी शान से बोतल बंद पानी शुद्ध जल के नाम पर खरीदकर पीते हैं।

आंकड़े बताते हैं कि पूरी दुनिया में गंदे पानी के संक्रमण से हर वर्ष मरने वालों की संख्या युद्ध और हिंसा में मरने वाले लोगों की संख्या से अधिक है। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार समूची दुनिया में हर साल आठ लाख लोगों की मौत केवल प्रदूषित पानी पीने से होती है।

विकास बनाम विनाश

पानी की जो यह बदली स्थिति है, वह कोई एक दिन में नहीं पैदा हुई। दरअसल, यह हमारे द्वारा अपनाए गए विकास के गलत पैमानों का नतीजा है। विकास के नाम पर हमारे नीति नियामकों ने हर बड़ी-छोटी नदी पर कई-कई बांध बना दिए। आंकड़े कहते हैं कि गंगा, यमुना और नर्मदा पर छोटे-बड़े कई बांध बने हैं। हम पहले नदी की धाराओं को रोकते हैं और फिर उन्हें स्वच्छ करने के दिखावे के लिए करोड़ों रुपये बर्बाद करते हैं। देश की अलग-अलग अदालतों ने बार-बार सरकारों को नदियों को बचाने के लिए उनकी न्यूनतम पर्यावरणीय प्रवाह को सुनिश्चित करने का आग्रह किया, आदेश दिया। इसी कड़ी में न्यायालय ने मार्च 2017 में गंगा-यमुना को मानव का दर्जा भी दिया किंतु ये आदेश सरकारों या इंसानों के दिलों में संवेदनाएं पैदा करने में अब तक तो नाकाम ही रहे हैं।



संवेदनशील बनने की जरूरत

अगर धरती पर जल को बचाना है तो हमें नीतियों को बदलने के साथ-साथ व्यक्तिगत स्तर पर पानी के प्रति संवेदनशील होना होगा। पानी ने हमें जीवन दिया है तो हमारा भी पानी के प्रति कुछ कर्तव्य बनता है। सबसे पहला कर्तव्य यह कि पानी का इस्तेमाल करते हुए पानी की बर्बादी को रोकना होगा। सुबह उठने के साथ ही हमें पानी की जरूरत होती है लेकिन हम पानी को अपनी जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल करते हैं। आज घर-घर में ऐसे बाथरूम और टॉयलेट हैं, जिनमें पानी की अथाह बर्बादी होती है। इतना ही नहीं कई काम हम नल को खुला छोड़कर करते हैं या नल की टोटी (टैप) खराब हो जाने के कारण पानी बूंद-बूंद टपकता रहता है तो ध्यान नहीं देते। जबकि इस तरह हर माह हजारों लीटर पानी बर्बाद होता है। फ्लश दबाते हुए या नल से बेवजह बह रहे पानी की बर्बादी के प्रति लापरवाह रहते हुए क्या हमने कभी खुद से सवाल पूछा कि पानी की इतनी बर्बादी हमारी धरती सहन करने में सक्षम है भी या नहीं? ये ऐसे सवाल हैं, जिनका सामना हर किसी को करना होगा। क्योंकि ये सवाल पानी के साथ-साथ हमारे अस्तित्व का भी है। *

रूठे पानी को मनाना होगा



जीवन में बढ़ती आरामतलबी और लापरवाही पृथ्वी को बर्बादी की ओर धकेल रही है। इसकी शुरुआत धरती पर सूखते जलस्रोतों से हो चुकी है। पानी को बर्बाद होने से बचाने के साथ हमें वर्षा जल को वापस पृथ्वी के गर्भ में पहुंचाना भी है। जिससे धरती के जलस्रोत रिचार्ज होकर पानीमय बने रहें। साथ ही गंदे पानी को साफ पानी में मिलने से बचाने और जल संरक्षण के तरीकों को अपनाने की जरूरत है। पानी अगर हमसे रूठा है तो उसकी वजह हम ही हैं। हमने ही पानी को रूठने का मौका दिया। लेकिन अगर हमने पानी को इंसानों से हो रही शिकायतों को दूर करने की दिशा में कदम नहीं उठाया तो वह दिन दूर नहीं, जब धरती की यह अमूल्य धरोहर हमसे सदा के लिए रूठ जाएगी। फिर चाहकर भी हम पानी को वापस नहीं लौटा पाएंगे। *

इंपैक्ट

संजय श्रीवास्तव

कोरोना के खौफ के कारण लोग एक-दूसरे से हाथ मिलाने में कतराने लगे हैं। क्या यही वह समय है, जब दुनिया को हैंडशेक से हाथ जोड़ लेना चाहिए और ठेठ भारतीय अभिवादन शैली यानी नमस्ते का अनुगमन आरंभ कर देना चाहिए? कोई और करे न करे, हम सभी देशवासियों को तो इसकी महत्ता को समझकर इसे पूरी तरह अपना ही लेना चाहिए।

हैंड शेक नहीं अब करिए नमस्ते

कोरोना के इस प्रकोप से पहले ही माइक्रो सॉफ्ट के पूर्व सीईओ बिल गेट्स ने हैंड शेक छोड़ दिया था। उन्हें हाथ मिलाना पसंद नहीं। वे अपने साथ हमेशा हैंड सैनिटाइजर लिए चलते हैं। पहले लोगों ने उनकी आदत को पिछड़ापन समझा, आज जब उन्होंने समाज सेवा के लिए कंपनी के बोर्ड के निदेशक पद को त्याग दिया है, तब उनके इस फैसले से ज्यादा उनकी हाथ न मिलाने की आदत सराही जा रही है।

हैंड शेक से बढ़ी दूरी

लंदन की एक मल्टीनेशनल कंपनी के स्वागत कक्ष में एक बड़े बोर्ड पर लाल घेरे में दो समानांतर लाइनों से क्रॉस के निशान के साथ लिखा है-प्लीज रेफ्रेन फ्रॉम हैंड शेकिंग। किसी भी भारतीय का इसे देखकर स्वाभाविक प्रतिक्रिया होगी कि संसार को आखिर अब समझ में आ ही गया कि हमारी सभ्यता कितनी वैज्ञानिक, महान और दूरदर्शी रही है। ऐसे लोगों की संख्या और उनका यह विश्वास बढ़ता जा रहा है कि जल्द से जल्द हाथ जोड़ना वैश्विक अभिवादन बन जाएगा। कम से कम इस एक मामले में भारत विश्वगुरु बन जाएगा। दुनिया हमारे हाथ जोड़ेगी। लेकिन सवाल है कि कोरोना, जिसने लोगों को हाथ जुड़वा दिया क्या उसके गुजर जाने के बाद लोग इस बात पर यकीन करते रहेंगे कि हाथ मिलाने से बेहतर है हाथ जोड़ लेना? क्या यह संस्कृति और संस्कार, दूसरे देशों के लोग सहर्ष स्वीकार कर लेंगे? अपनी परंपरा को तज पश्चिमी जगत भी अभिवादन का यही तरीका अपना इसे वैश्विक बनाएगा?





पहले भी चली है मुहिम

हाथ मिलाने की जगह हाथ जोड़ने की परिपाटी के लिए अभियान 2008-09 और 2014 में भी चल चुका है। तब भी इस बात की उम्मीद की गई कि लोग हाथ मिलाने में यकीन रखना छोड़कर अभिवादन की भारतीय पद्धति अपना लेंगे। बहुतेरे देशों सहित अमेरिका और कनाडा में लोगों ने हाथ न मिलाने की बात पर खूब कड़ाई से पालन किया। लेकिन तब के आंकड़े बताते हैं कि संक्रमण के प्रसार में वहां कोई उल्लेखनीय कमी नहीं आई। इसीलिए संकट बीतने के बाद लोग फिर हाथ जोड़ना छोड़कर हैंड शेक पर लौट आए। जब सार्स फैला था तो लाख कोशिशों के बावजूद महज 10 फीसद ब्रिटेनवासियों ने कुछ दिनों के लिए हाथ मिलाना छोड़ा था और अमेरिका, अर्जेंटीना, मैक्सिको को मिलाकर ऐसे लोग केवल 24 फीसदी थे, जिन्होंने मरीजों या संदिग्ध संक्रमित व्यक्ति से जिस तरह की शारीरिक दूरी बनाई थी, हाथ मिलाना उन सभी में से एक था।

बीमारियों का संवाहक

कहते हैं कि किसी से हाथ मिलाने के बाद आप उसके बारे में कुछ न कुछ भाव लेकर लौटते हैं, शायद बीमारी भी। सर्दी, जुकाम और श्वांस रोग के अलावा त्वचा रोगों के संक्रमण के रोकथाम के बहाने से इस बात को कई बार प्रचारित किया गया है। संक्रमित व्यक्ति से हाथ मिलाने के बाद अगर वही हाथ आप नाक, मुंह, आंखों पर फेर लेते हैं तो संक्रमण संभव है इसीलिए कुछ शोधों के हवाले से कहा गया है कि हाथ मिलाने पर प्रतिबंध लग जाना चाहिए। अस्पतालों को हाथ न मिलाने की जगह घोषित कर देना चाहिए। हाथ मिलाने से दूसरे व्यक्ति में विद्यमान अनिष्ट शक्ति का हम पर आक्रमण होने की आशंका है। बिना छुए अभिवादन करने की अपेक्षा ऐसे स्पर्शयुक्त अभिवादन से एक शरीर की संचित शक्ति या ऊर्जा दूसरे में प्रवेश कर जाती है। इस तरह शरीर में चिंता और कमजोरी आने की आशंका बढ़ जाती है। इन बातों को भारतीय तो मान जाएंगे लेकिन जिनकी परंपरा हैंड शेक की है, वे इस पर उतना यकीन नहीं करेंगे। ऐसे में आवश्यकता इस बात की है कि इस बात के आंकड़े और वैज्ञानिक विवरण देकर लोगों को समझाया जाए कि हैंड शेक से वास्तव में जीवाणु, विषाणु भारी मात्रा में फैलते हैं। अगर ऐसी अवधारणा की पुष्टि नहीं होती तो यह दौर गुजर जाने के बाद लोग हाथ मिलाना नहीं छोड़ेंगे।

हैंड शेक करें बशर्ते

हालांकि अगर लोग अपना हाथ हमेशा साफ रखें, श्वसन के तौर-तरीके का पूरा ख्याल रखें तो हाथ मिलाने में कोई बुराई नहीं है। भारत जैसे तमाम देशों में हैंड हाइजीन वैसे भी बहुत बेहतर नहीं है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानक के अनुरूप हाथ धोना बहुतों को नहीं आता है। उनकी इस खामी को उनका अपना इम्यून सिस्टम तो संभाल लेता है लेकिन दूसरे के बैक्टीरिया का संक्रमण भी आपका शरीर संभाल लेगा यह जरूरी तो नहीं। तो हाथ मिलाने में दूसरों को नुकसान तो है लेकिन यह तभी जब किसी एक या दोनों के हाथ साफ न हों।

जिस तरह हमारी हाथ जोड़ने की परंपरा अतिशय प्राचीन है, उसी तरह हाथ मिलाने की प्रथा भी 2000 साल से ज्यादा पुरानी है। ऐसे में विदेशियों को इससे बचने के लिए कहना आसान है पर उनका इस से रुक पाना मुश्किल। अमेरिकी शोधार्थी कहते हैं कि एक-दूसरे से स्वस्थ शारीरिक स्पर्श मनुष्यों के समग्र स्वास्थ्य के लिए बेहतर है। यूनिवर्सिटी ऑफ मियामी के टच रिसर्च इंस्टीट्यूट के संस्थापक टिफिनी फील्ड के अनुसार हाथ मिलना एक किंचित लंबा समय लेने वाला अभिवादन है। यह अभिवादन के संवाद को स्थापित करता है, हेलो या संक्षिप्त सा कोई अभिवादन यह नहीं कर सकता। किसी दूसरे का स्पर्श, दबाव, दोलन, तंत्रिका तंत्र के प्राणेशा या वेगस नर्व की सक्रियता बढ़ा देते हैं। ये तंत्रिका हर महत्वपूर्ण अंग से जुड़ी है। इसीलिए दूसरे का सकारात्मक स्पर्श हमारे दिल को राहत और सुकून देता है। पाचन तंत्र को सक्रिय कर हमारे पेट को आराम देता है। इससे सेरेटोनिन के स्रावण की मात्रा बढ़ जाती है। यह हमारी शारीरिक प्रणाली का प्राकृतिक अवसादरोधक है।

सेरेटोनिन एक ऐसा हॉर्मोन है, जो हमें प्रसन्नता प्रदान करता है, हमारा मूड खुशनुमा बना देता है। हमारे चेहरे का भाव प्रसन्नतापूर्ण हो जाता है, हमारी वाणी में मिठास अनायास आ जाती है। वेगस तंत्रिका तंत्र की सक्रियता तनाव पैदा करने वाले कॉर्टीसॉल हॉर्मोन के स्रावित होने की दर कम करता है। कॉर्टीसॉल हमें वायरल, बैक्टीरिया तथा कैंसर कोशिकाओं से निजात दिला सकता है। जाहिर है, ऐसा मानने वाले हाथ मिलाना नहीं छोड़ेंगे। *

22-3-2020HB-Rav-4 raipur bilaspur_Layout 1 20-Mar-20 6:38 PM Page 1

राजीव खंडेलवाल टीवी, फिल्म करने के बाद डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी अपनी एक्टिंग से ऑडियंस को एंटरटेन कर रहे हैं। इन दिनों वह एक वेब शो 'मर्जी' को लेकर चर्चा में हैं। यह किस तरह का वेब शो है? उनका इसमें किरदार क्या है? फिल्मों में उन्हें उतनी सफलता नहीं मिली, जितनी मिलनी चाहिए, क्या इस बात का मलाल है उन्हें? राजीव खंडेलवाल से खुली बातचीत।

मैंने अब तक वही काम किया है जिसमें कुछ अलग करने को था : राजीव खंडेलवाल



मुलाकात

पूजा सामंत

राजीव खंडेलवाल ने टीवी वर्ल्ड में खूब नाम कमाया। फिल्मों में भी उन्होंने ऐसे किरदारों को चुना, जिनमें एक्टिंग टैलेंट दिखाने का मौका मिलता। इन दिनों राजीव, वूट सेलेक्ट के नए वेब शो 'मर्जी' की वजह से चर्चा में हैं। इस थ्रिलर वेब शो में राजीव के अपोजिट आहना कुमरा हैं। अब तक के करियर और वेब शो से जुड़ी बातचीत राजीव खंडेलवाल से।

वेब शो 'मर्जी' को आपने किस वजह से एक्सेप्ट किया?

जो कलाकार एक्सपेरिमेंटल होते हैं, वह डिफरेंट जॉनर, डिफरेंट वर्क करने में यकीन रखते हैं। मैं भी ऐसा ही कलाकार हूं। मुझे वेब शो 'मर्जी' का कॉन्सेप्ट बहुत ही डिफरेंट लगा तो इसको एक्सेप्ट किया। बतौर कलाकार मैंने अब तक वही काम किया है, जिसमें कुछ अलग करने को था।

आपने पॉजिटिव कैरेक्टर ज्यादा किए हैं। इस वेब सीरीज में आपका किरदार किस तरह का है?

वेब शो 'मर्जी' का मेरा किरदार ग्रे शेड वाला है। असल में हम सब इंसान ग्रे शेड वाले ही होते हैं। कोई भी इंसान पूरी तरह से सही और अच्छा नहीं होता है। हम सभी पॉजिटिव, नेगेटिव का मिक्सचर होते हैं। लेकिन अपने इर्द-गिर्द मौजूद ग्रे शेड, बिहेवियर वाले लोगों की पहचान करना मुश्किल होता है। ऐसे लोगों की पहचान खास तरह की सिचुएशन में ही होती है। असल में मैं भी कितना अच्छा या बुरा हूं, यह तो सिर्फ मेरी पत्नी मंजरी या मेरे बहुत करीबी लोग ही बता सकते हैं।

इस वेब शो में अपने किरदार के बारे में जरा डिटेल में बताइए?

मैं इस वेब शो में डॉक्टर अनुराग का किरदार निभा रहा हूं। अनुराग की जान-पहचान समीरा (आहना कुमरा) से होती है। उनके बीच प्यार हो जाता है। अचानक समीरा, अनुराग पर शोषण का आरोप लगाती है। इसके बाद वेब शो में सस्पेंस, थ्रिलर, ड्रामा, रिवेंज सब कुछ दर्शकों को देखने को मिलता है। इस कहानी का बैकड्रॉप शिमला का है, हमने वहां कड़ाके की ठंड में इस वेब शो की शूटिंग पूरी की थी।



ऐसा लग रहा है कि मी टू अभियान से आपका वेब शो इंस्पायर है?

ऐसा नहीं है। जब इस वेब शो की कहानी को लिखा गया था तो इंडिया में खासकर मुंबई में मी टू अभियान की शुरुआत नहीं हुई थी। ऐसे में हमारी कहानी इस अभियान से इंस्पायर नहीं है। हां, यह एक विदेशी कहानी से जरूर इंस्पायर्ड है।

आपकी नजर में क्या मी टू अभियान सही था?

बिल्कुल सही था। गलत बात को रोकना जरूरी होता है। लेकिन अफसोस गलत बात को कई लोग सपोर्ट करते हैं, कमजोर लोगों का शोषण करते हैं, उनकी मजबूरी का फायदा उठाते हैं। ऐसे में मी टू जैसे अभियान की जरूरत पड़ती है। लेकिन मैं चाहता हूं कि मी टू का मिसयूज न किया जाए।

इस वेब शो में आपके कुछ बोल्ड सींस भी शूट हुए हैं। क्या आपकी वाइफ आपके इस तरह के रोल को एक्सेप्ट करती हैं?

मेरी वाइफ मंजरी बहुत प्रोग्रेसिव है। उसे हमारे प्यार और रिश्ते पर भरोसा है। कई बार मेरे पास ऐसे कैरेक्टर आते हैं, जिसमें बोल्ड सींस करने होते हैं। ऐसे में मैं मंजरी को भी स्क्रिप्ट पढ़ने को देता हूं। वह कहती है-'राजीव, दिस इज टू गुड।' उसका जवाब सुनकर मुझे अच्छा लगता है। मैं उसके विश्वास को मन ही मन सराहता हूं। फिर मुझे भी बतौर कलाकार पता होता है कि कोई डायरेक्टर, प्रोड्यूसर ऐसे सींस क्यों अपने प्रोजेक्ट में रख रहा है। यह कहानी की जरूरत है या नहीं, इस बात को मैं पहले ही समझ जाता हूं। अगर कोई सीन कहानी की डिमांड है तो उसे करने में हर्ज नहीं है। फिर आज की तारीख में स्क्रीन पर किसिंग सींस नॉर्मल हो गए हैं। मैं एक कलाकार हूं तो खुद को किसी इमेज में बांधना नहीं चाहता हूं, कोई बात अगर कैरेक्टर की डिमांड है तो उसे पूरा करना मेरा फर्ज है।

आपने टीवी पर खूब नाम कमाया। लेकिन फिल्मों में उम्मीद के मुताबिक सफलता नहीं मिली, क्या इस बात का अफसोस है?

मैंने फिल्मों में काम पाने के लिए अपनी तरफ से कोशिश नहीं की, न ही इंतजार किया। जो प्रोजेक्ट अच्छे लगे, वही किए। अगर कोई प्रोड्यूसर, प्रोडक्शन हाउस मेरे पास आकर भी ऑफर दे और वो मुझे पसंद नहीं तो उसे नहीं करता। मैं अपनी मर्जी का मालिक हूं। जब कहानी, किरदार पसंद आते हैं तो ही कोई प्रोजेक्ट करता हूं। एक प्रोजेक्ट करने के बाद हॉलीडे पर निकल जाता हूं। वापस आकर अगला प्रोजेक्ट करता हूं।

आपका अगला प्रोजेक्ट क्या है?

मेरा अगला प्रोजेक्ट फिल्म 'नक्सल' है। इसके बारे में बाद में डिटेल में बात करूंगा।*



अपने कमाल के डांस परफॉर्मेंस की वजह से कल्पना अय्यर बॉलीवुड में अस्सी के दशक में बड़े पर्दे पर छा गई थीं। बतौर एक्ट्रेस भी उन्होंने तरह-तरह के रोल किए। लेकिन अचानक वह बड़े पर्दे से गायब हो गईं। अब वह दोबारा कमबैक करना चाहती हैं। अपने करियर से जुड़ी बातें साझा कर रही हैं कल्पना अय्यर।

उम्मीद है एक्टिंग में मेरी फिर से वापसी होगी

अपनी बातें

कल्पना अय्यर

बॉलीवुड में अस्सी के दशक में फिल्म 'प्यारा दुश्मन' का सॉन्ग 'हरि ओम हरि...', फिल्म 'लूटमार' के सॉन्ग 'जब छाए मेरा जादू...' और फिल्म 'वारदात' के सॉन्ग 'तू मुझे जान...', फिल्म 'अरमान' के डांस नंबर 'रंभा हो...' पर कमाल की परफॉर्मेंस देनी वाली एक्ट्रेस कल्पना अय्यर दर्शकों की पसंदीदा बन गई थीं। 1990 में रिलीज हुई फिल्म 'राजा हिंदुस्तानी' के सॉन्ग 'परदेसी-परदेसी जाना नहीं...' में भी उनकी परफॉर्मेंस को कोई नहीं भूल सकता है। उन्होंने अपने करियर में 100 से अधिक फिल्मों में अलग-अलग तरह के किरदार भी निभाए, जिनमें 'सत्ते पे सत्ता', 'डिस्को डांसर', 'मनोकामना', 'अरमान', 'हम साथ-साथ हैं' जैसी फिल्में भी शामिल हैं। लेकिन लगभग बीस साल से कल्पना अय्यर फिल्मी दुनिया से दूर दुबई में सैटल हैं। हाल ही में उन्होंने सोशल मीडिया के जरिए फिर से एक्टिंग में वापसी करने की ख्वाहिश जाहिर की। अपने बॉलीवुड से दूर होने और फिर वापसी के डिसीजन के बारे में कल्पना बताती हैं, 'मैंने बॉलीवुड में 10-12 साल जमकर काम किया। फिल्म मेकर राज एन. सिप्पी ('सत्ते पे सत्ता' के मेकर) और उनकी पत्नी से मेरी अच्छी दोस्ती हुई। राज जी की पत्नी ने एक बार मुझे बताया कि उनके एक करीबी रिश्तेदार दुबई में होटल रन करते हैं, उन्हें एक मैनेजर की जरूरत है। अगर मैं बतौर मैनेजर वहां काम करना चाहूं तो कर सकती हूं। फिर मैंने अपनी मां, अपनी बहन से इसे बारे में डिस्कशन किया। आखिर में मैं इस फैसले पर पहुंची कि पता नहीं बॉलीवुड में कितने साल और काम मिले। ऐसे में दुबई में सैटल होना ज्यादा अच्छा है। मैं दुबई जाकर उस होटल में काम करने लगी। यहां मुझे परिवार के साथ रहने के लिए घर भी मिला। मैं एक अच्छी जिंदगी गुजारने लगी। मैंने लगभग अठारह साल इस होटल में काम किया। लेकिन हाल ही में यह होटल बंद हो गया। इस जॉब के जाने के बाद से ही मैं कुछ महीनों से फिर से एक्टिंग में वापसी करने की सोचने लगी। इस बारे में मैंने सोशल मीडिया पर इच्छा भी जताई कि मैं वापस इंडिया लौटना चाहती हूं। मैं यहां फिल्म, टीवी, वेब सीरीज, शॉर्ट फिल्म में पॉजिटिव, नेगेटिव, सपोर्टिंग हर तरह के रोल करना चाहती हूं। मुझे पूरी उम्मीद है कि एक्टिंग में मेरी फिर से वापसी होगी।'

कल्पना अय्यर का कहना है कि जैसे करियर की शुरुआत फिल्मों में आसानी से हुई थी, वैसे ही वापसी भी आसानी से हो जाएगी। वह अपने करियर की शुरुआत के बारे में बताती हैं, 'मैं एक मिडिल क्लास तमिल ब्राह्मण परिवार से हूं। मेरे परिवार का दूर-दूर तक फिल्मों से कोई नाता नहीं था। कॉलेज के दिनों में मेरे लुक्स की बहुत तारीफ हुआ करती थी। बाद में मैंने फेमिना मिस इंडिया में पार्टिसिपेट किया, फर्स्ट रनरअप बनी। मिस वर्ल्ड कॉम्पिटिशन में भी फर्स्ट फाइनलिस्ट की लिस्ट में थी। इसके बाद मेरे लिए फिल्मों के दरवाजे खुल गए। राजश्री प्रोडक्शंस ने अपनी फिल्म 'मनोकामना' में लीड एक्ट्रेस का किरदार दिया। इस फिल्म में मेरी एक्टिंग की खूब तारीफ हुई। इसके बाद ही देव आनंद साहब ने मुझे उनकी फिल्म 'लूटमार' ऑफर की, इस फिल्म में मुझ पर एक गाना 'जब छाए मेरा जादू...' फिल्माया गया, जो बहुत हिट हुआ। इसके बाद तो मेरे पास ढेरों डांस सॉन्ग्स की जैसे लाइन ही लग गई। इसके बाद मैं इंडस्ट्री में छा गई।'



फिल्म 'राजा हिंदुस्तानी' के सॉन्ग 'परदेसी-परदेसी' में आमिर खान के साथ कल्पना अय्यर

डेब्यू फिल्म में लीड एक्ट्रेस के तौर पर सराहे जाने के बाद कल्पना अय्यर ने वैंप, डांसर, को-एक्ट्रेस के तौर पर कई फिल्मों में काम किया। जबकि वह बतौर लीड एक्ट्रेस बॉलीवुड में नाम भी कमा सकती थीं, लेकिन इस बात का कल्पना को कोई अफसोस नहीं है। वह कहती हैं, 'मेरा जैसा भी फिल्मों में करियर रहा है मैं उससे संतुष्ट हूं। मुझे कोई मलाल नहीं है कि मैंने डांसर, को-स्टार और वैंप के रोल किए। मेरे कोई बड़े सपने नहीं थे। बस मेरा मन अच्छा काम और किरदार करके ही खुश हो जाता था।'*

प्रस्तुति : समृद्धि

अरीना डे सीरियल 'बैरिस्टर बाबू' में अठारहवीं सदी की एक विधवा का रोल कर रही हैं, जो कुरीतियों का शिकार है। अरीना खुद इन कुरीतियों को कैसे देखती हैं? अपने रोल के लिए उन्होंने किस तरह की तैयारी की? अरीना डे अब तक दो सीरियल में मां का रोल कर चुकी हैं, क्या उन्हें टाइपकास्ट होने का डर नहीं है?

गलत प्रथाएं-कुरीतियां मानवीय मूल्यों के खिलाफ होती हैं अरीना डे

बातचीत

राजन



अरीना डे एक्ट्रेस बनने का सपना लेकर कोलकाता से मुंबई आईं। काफी रिजेक्शन के बाद आखिरकार उन्हें स्टार प्लस का सीरियल 'मुस्कान' मिला, इसमें अरीना का लीड रोल था। इसमें वह एक छोटी बच्ची मुस्कान की मां बनी थीं। सीरियल में उनकी एक्टिंग को काफी पसंद किया गया। अब वह कलर्स चैनल के नए सीरियल 'बैरिस्टर बाबू' में नन्ही बोंदिता की विधवा मां का किरदार निभा रही हैं। हाल ही में अरीना डे से सीरियल 'बैरिस्टर बाबू' और करियर को लेकर लंबी बातचीत हुई। पेश है बातचीत के चुनिंदा अंश-

सीरियल 'बैरिस्टर बाबू' को एक्सेप्ट करने की वजह क्या रही?

सीरियल 'बैरिस्टर बाबू' को एक्सेप्ट करने के कई स्ट्रॉन्ग रीजन हैं। सबसे पहला तो यह कलर्स चैनल का सीरियल है। इतने बड़े चैनल पर सीरियल का टेलीकास्ट होना अपने आप में बड़ी बात है। इनके हर शो की रीच बहुत बड़ी है। दूसरा, सीरियल में मेरे किरदार में बहुत गहराई है। साथ ही इस सीरियल का कंटेंट बहुत अच्छा है।

सीरियल की कहानी और अपने किरदार के बारे में बताइए?

सीरियल की कहानी कोलकाता की है, जो अठारहवीं सदी में घटती है। कहानी आठ साल की मासूम बच्ची बोंदिता के इर्द-गिर्द घूमती है। एक घटना घटती है, जिसके बाद नन्ही बोंदिता की शादी उससे बहुत बड़े उम्र के बैरिस्टर अनिरुद्ध (प्रविष्ट मिश्रा) से हो जाती है।



सीरियल 'बैरिस्टर बाबू' में अरीना डे

लेकिन अनिरुद्ध, नन्ही बोंदिता को अपनी स्टूडेंट की तरह घर पर रखता है, उसे पढ़ाई के लिए मोटिवेट करता है। आगे चलकर बोंदिता की किस्मत उसे कहां लेकर जाएगी, इसके लिए आपको सीरियल देखना होगा। सीरियल में मैं बोंदिता की मां सुमति के किरदार में हूं। सुमति एक विधवा है। चूंकि मैं अठारहवीं सदी की एक विधवा मां का कैरेक्टर प्ले कर रही हूं, इसलिए मेरे सिर पर बाल नहीं हैं। मैं सफेद लिबास में पल्लू ओढ़कर ही रहती हूं। मेरे किरदार के कई शेड्स हैं। सीरियल में मेरा रोल परफॉर्मेंस ओरिएंटेड है।

क्या आपने अपने किरदार के लिए बाल मुंडवाए हैं?

नहीं, प्रोस्थेटिक मेकअप के जरिए मेरे बालों को छुपाया गया है। बता दूं कि यह बहुत मुश्किल प्रोसेस है। दो घंटे में जाकर मेकअप आर्टिस्ट मेरा लुक तैयार करते हैं। फिर 12 घंटे की शूटिंग के बाद जब पैकअप होता है तो फिर डेढ़ घंटे इस मेकअप को उतारने में लग जाते हैं। मैं भगवान से बस यही प्रार्थना करती हूं कि मेरा काम सभी को पसंद आए।

सीरियल में महिलाओं के साथ होने वाली सामाजिक कुरीतियों को दिखाया जा रहा है। आप इन कुरीतियों को कैसे देखती हैं?

गलत प्रथाएं, कुरीतियां मानवीय मूल्यों के खिलाफ होती हैं। मैंने खुद इस विधवा के हुलिए में अपनी कोई तस्वीर नहीं खींची है। मैं खुद को आईने में देखना नहीं चाहती। सोचती हूं उस दौर की विधवाओं ने यह नर्क सी जिंदगी कैसे जी होगी। उनकी दिनचर्या सुनकर मेरा दिल कांप सा गया। न खुलकर बोलना, न हंसना, अंधेरे में घुटकर रहना, ये सब बातें सोचकर मुझे रोना आ जाता है। मैंने उनका दर्द करीब से, दिल से महसूस किया है।

आप अब तक दो सीरियल में मां के किरदार कर चुकी हैं। आपको टाइपकास्ट होने का डर नहीं लगता है?

मुझे टाइपकास्ट होने पर कोई डर नहीं है। सुमति का रोल जानदार है, उसका रोल परफॉर्मेंस ऑरिएंटेड है। इसमें कई शेड्स हैं। दूसरी बात, मैंने कोलकाता में थिएटर किया है। वहां हमें यही सिखाया गया था कि सच्चा कलाकार वही होता है, जो सिर्फ एक्टिंग पर फोकस करता है। उसका किरदार कैसा है, यह नहीं सोचना चाहिए।

एक्टिंग करियर के दौरान आपको रिजेक्शन भी फेस करना पड़ा होगा, उसे आपने कैसे हैंडल किया? इस बारे में बताइए?

मैं एक्टिंग में करियर बनाने के लिए कोलकाता से मुंबई आई। मां भी मेरे साथ मुंबई आईं। अंधेरी के आदर्श नगर के एक चॉल में मैंने कमरा किराए पर ले लिया और रहने लगी। मुंबई की फास्ट लाइफ स्टाइल से मैं बिल्कुल वाकिफ नहीं थी, एडजस्ट करने में काफी समय लग गया। कहां जाना है, कैसे जाना है, किस से मिलना है, यह नहीं जानती थी। कभी अकेले तो कभी मां के साथ ऑडिशन देने जाती थी। कई बार रिजेक्शन झेला लेकिन हार नहीं मानी। इसकी वजह मुझे मिला, अपनों का सपोर्ट था। आखिर स्टार प्लस के 'मुस्कान' सीरियल में मुझे लीड रोल मिला। इसने मुझे पहचान दी। 'मुस्कान' सीरियल की सक्सेस से मेरा कॉन्फिडेंस बढ़ा। मम्मी-पापा को भी विश्वास हुआ कि उनकी बेटी एक्टिंग में अपने दम पर पहचान बना सकती है।

आगे कौन से प्रोजेक्ट कर रही हैं?

अभी तो सीरियल 'बैरिस्टर बाबू' पर ही फोकस है। लेकिन आगे चैलेंजिंग किरदार ही करूंगी।*



